अपने लक्ष्य / सेवकाई को पूर्ण करने के लिए अनिवार्य

फ्रैंकलीन द्वारा नोट्स

निर्गमन 33:12 और मूसा ने यहोवा से कहा,''देख, तू मुझ से कहता है, 'इन लोगों को ले चल।' परन्तु तू ने मुझे यह नहीं बताया कि तू मेरे साथ किसको भेजेगा। फिर भी, तूने कहा है, 'मैं तुझे नाम से जानता हूं, और तू मेरी कृपा-दृष्टि का पात्र भी है।

I. ''देख तू मुझ से कहता है, कि इन लोगों को ले चल''

मूसा को उसके सेवक के रुप में बुलाया गया।
आप को भी यीशु मसीह की सेवा करने के लिए बुलाया गया है।

रोमियों 1:6 जिन में से तुम भी यीशु मसीह के होने के लिये बुलाए गए हो।
1 पतरस 2:9 पर तुम एक चुना हुआ वंश, और राज-पदधारी, याजकों का समाज, और पवित्र लोग, और (परमेश्वर की) निज प्रजा हो, इसलिये कि जिस ने तुम्हें अन्धकार में से अपनी अद्‌भुत ज्योति में बुलाया है, उसके महान गुणों को प्रगट करो।

उसके महान गुणों को प्रगट करो

- ठीक उसी प्रकार जैसे मूसा ने लाल समुद्र में फिरौन के सामने और जंगल में किया – चिन्ह और चमत्कार (निर्गमन 7:3; प्रेरितों के काम 2:22; 2:43; 4:30; 6:8; 14:3; रोमियों 15:19; 1 कुरिन्थियों 2:4)।

2 कुरिन्थियों 5:17-19 और सब बातें परमेश्वर की ओर से हैं, जिस ने मसीह के द्वारा अपने साथ हमारा मेल मिलाप कर लिया और मेल मिलाप की सेवा हमें सौंप दी है।(19) अर्थात् परमेश्वर ने मसीह में होकर अपने साथ संसार का मेल मिलाप कर लिया, और उन के अपराधों का दोष उन पर नहीं लगाया और उस ने मेल मिलाप का वचन हमें सौंप दिया है।।

रोमियों 8:30 फिर जिन्हें उन से पहिले से ठहराया, उन्हें बुलाया भी, और जिन्हें बुलाया, उन्हें धर्मी भी ठहराया है, और जिन्हें धर्मी ठहराया, उन्हें महिमा भी दी है।।

इफिसियों 4:1 कि जिस बुलाहट से तुम बुलाए गए थे, उसके योग्य चाल चलो।

इफिसियों 4:4 एक ही देह है, और एक ही आत्मा; जैसे तुम्हें जो बुलाए गए थे अपने बुलाए जाने से एक ही आशा है।

II. ''यह नहीं बताया कि तू मेरे संग किसको भेजेगा''

कितनी ही बार ऐसा हुआ, जब प्रभु ने आपको कुछ काम करने को दिया, पर उसने उसका पूरा विवरण नहीं दिया कि ''कैसे''। और विवरण तभी पता चलते हैं जब आप उसकी आज्ञा को मानते हुए चलना आरम्भ करते हैं।

III. ''तूने कहा है, 'मैं तुझे नाम से जानता हूं''

वह आपका नाम जानता है

यशायाह 43:1 हे इस्राएल तेरा रचनेवाला और हे याकूब तेरा सृजनहार यहोवा अब यों कहता है, मत डर, क्योंकि मैं ने तुझे छुड़ा लिया है; मैं ने तुझे नाम लेकर बुलाया है, तू मेरा ही है।

लूका 10:20 ... इस से आनन्दित हो कि तुम्हारे नाम स्वर्ग पर लिखे हैं।।

प्रकाशितवाक्य 21:27 केवल वे लोग जिन के नाम मेम्ने के जीवन की पुस्तक में लिखे हैं।।

- आपका स्वर्गीय पिता आपका नाम जानता है और उसने उसे दर्ज कर रखा है।
- ठीक उसी प्रकार जैसे आपके जन्म के समय आपके माता-पिता ने आपका नाम सरकारी दफ़्तर में दर्ज कराया था।

IV. ''तू मेरी कृपा-दृष्टि का पात्र भी है''

अनुग्रह (2580): पुराने नियम में – कृपा, अनुग्रह, सुहाना, मुल्यवान, (अच्छी –) कृपा को ''अनुग्रह'' भी कहा गया है।

उत्पत्ति 6:8 परन्तु यहोवा के अनुग्रह की दृष्टि नूह पर बनी रही।।

उत्पत्ति 18:3 हे प्रभु, यदि मुझ पर तेरी अनुग्रह (2580) की दृष्टि है तो मैं विनती करता हूं, कि अपने दास के पास से चले न जाना।

हम सब ने अनुग्रह पाया है

यूहन्ना 1:16 क्योंकि उस की परिपूर्णता से हम सब ने प्राप्त किया अर्थात् अनुग्रह पर अनुग्रह।

- नए नियम की युनानी भाषा ($\chi\alpha\rho\iota\varsigma$ / खारिस) का अर्थ भी : कृपा, सुहाना है।
- यह उसके द्वारा कहे गए कार्य को करने की योग्यता और सामर्थ भी है।
- 2 कुरिन्थियों 12:9 और उस ने मुझ से कहा, मेरा अनुग्रह तेरे लिये बहुत है; क्योंकि मेरी सामर्थ निर्बलता में सिद्ध होती है।
- परन्तु उसके अनुग्रह की सामर्थ को अनुभव करने के लिए विश्वास के कदम चाहिए।
- 1 कुरिन्थियों 15:10 परन्तु मैं जो कुछ भी हूं, परमेश्वर के अनुग्रह से हूं: और उसका अनुग्रह जो मुझ पर हुआ, वह व्यर्थ नहीं ठहरा परन्तु मैं ने उन सब से बढ़कर परिश्रम भी किया: तौभी यह मेरी ओर से नहीं हुआ परन्तु परमेश्वर के अनुग्रह से जो मुझ पर था।

निर्गमन 33:13 इसलिए अब मैं तुझ से विनती करता हूं, यदि तेरी कृपा-दृष्टि मुझ पर है, तो मुझे अपने मार्ग समझा दे, कि मैं तुझे जान सकूं, जिससे कि मैं तेरी कृपा-दृष्टि को प्राप्त करुं। यह भी ध्यान रख कि यह जाति तेरी ही प्रजा है।

I. मुझे अपने मार्ग समझा दे

- "समझा" इस शब्द का अर्थ : जानना, देख कर पता लगाना
- "मार्ग" चलता हुआ रास्ता, प्रतीकात्मक रुप से, जीवन का पथ, काम करने का तरीका

किसी और मनुष्य से ज़्यादा मूसा ने परमेश्वर के मार्ग को देखा और उसका अनुभव किया।

जलती हुई झाड़ी/ फिरौन के सामने/ महामारी/ लाल समुद्र का दो भाग होना/ मन्ना/ बटेर/ चट्टान से पानी/ बिजली की चमक और बादल की गरज - आग और धुआं, और सीनै पर्वत पर कंपन/ और यहोवा का बोलना और दस आज्ञाओं का दिया जाना : इन सबका सामना करने के पश्चात :- मूसा ने जाना :

क्योंकि यहोवा कहता है, मेरे विचार और तुम्हारे विचार एक समान नहीं है, न तुम्हारी गति और मेरी गति एक सी है। क्योंकि मेरी और तुम्हारी गति में और मेरे और तुम्हारे सोच विचारों में, आकाश और पृथ्वी का अन्तर है।। यशायाह 55:8-9

और इन सभी का अनुभव करने के बाद भी मूसा और अधिक के लिए पुकारता है क्योंकि ...

मूसा की परम इच्छा केवल परमेश्वर के मार्ग को समझना नहीं, केवल वही उसका लक्ष्य नहीं था, परन्तु यह कि :

II. मैं तुझे जान सकूं

- मूसा की यह तीव्र इच्छा थी कि वह सर्वशक्तिमान परमेश्वर के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध बनाए।

- वह मात्र "परमेश्वर के मार्ग" समझने से सन्तुष्ट नहीं था। मूसा स्वयं परमेश्वर को जानना चाहता था।

- बहुत से विश्वासी, किसी न किसी रीति से, परमेश्वर के मार्ग जानना चाहते हैं - उसकी करुणा, उसका न्याय, उसकी चंगाई, उसके वरदान, उसकी आशिषें ...

- परन्तु हम में से कितने लोग वास्तव में – जैसा हमारी प्रार्थनाओं और जीने के ढंग से प्रकट होता है – उसको जानना चाहते हैं? कितने यत्न से घनिष्ठ सम्बन्ध की चाह में हैं?

- यदि आप किसी को इस हद तक जानते हैं – तो आप उनके मार्ग भी जानते हैं। उदाहरण – विवाह

इसलिए परमेश्वर को अच्छे से जानना – और घनिष्ठता से जानना – उसके मार्ग जानने से आरम्भ होता है, जो हम उसके लिखित वचन तथा बोले गए शब्द (प्रार्थना) के साथ समय बिता कर सीख सकते हैं।

मूसा के दिमाग में अभी एक और लक्ष्य था :

III. जिससे कि मैं तेरी कृपा–दृष्टि (या अनुग्रह) को प्राप्त करुं

इसे हम किस प्रकार से समझें? परमेश्वर ने यह पहले ही कह दिया था कि तुझ पर मेरी कृपा–दृष्टि है और मूसा ने इसे स्वीकारा। मूसा "परमेश्वर के मार्ग" जानना चाहता था / ताकि वह परमेश्वर को और घनिष्ठता से जान सके / जिससे वह उसकी उपस्थिति में चलने के लिए और अधिक अनुग्रह प्राप्त करे।

यह मूसा की प्रेरणा और सम्पूर्ण इच्छा थी!
और
यही हमारी भी प्रेरणा और सम्पूर्ण इच्छा होनी चाहिए!

पौलुस की हम सब के लिए यह इच्छा है:

कुलुस्सियों 1:9–10 इसी लिये जिस दिन से यह सुना है, हम भी तुम्हारे लिये यह प्रार्थना करने और विनती करने से नहीं चूकते कि तुम सारे आत्मिक ज्ञान और समझ सहित परमेश्वर की इच्छा की पहिचान में परिपूर्ण हो जाओ। **ताकि तुम्हारा चाल-चलन प्रभु के योग्य हो, और वह सब प्रकार से प्रसन्न हो, और तुम में हर प्रकार के भले कामों का फल लगे, और परमेश्वर की पहिचान में बढ़ते जाओ।**

1 थिस्सलुनीकियों 2:12 कि तुम्हारा चाल चलन परमेश्वर के योग्य हो, जो तुम्हें अपने राज्य और महिमा में बुलाता है।।

1 थिस्सलुनीकियों 4:1 निदान, हे भाइयों, हम तुम से विनती करते हैं, और तुम्हें प्रभु यीशु में समझाते हैं, कि जैसे तुम ने हम से योग्य चाल चलना, और परमेश्वर को प्रसन्न करना सीखा है, और जैसा तुम चलते भी हो, वैसे ही और भी बढ़ते जाओ।

हमें मूसा के समान प्रार्थना करनी चाहिए :

इसलिए कि तेरी कृपा–दृष्टि मुझ पर है,

- ○ मुझे अपने मार्ग दिखा – मैं तेरी गति समझ पाऊं
- ○ मैं तुझे जान पाऊं
- ○ ताकि में तेरी दृष्टि में अनुग्रह (कृपा) पाऊं

यीशु बुद्धि और डील-डौल में (या परिपक्वता में) और परमेश्वर और मनुष्यों के अनुग्रह में बढ़ता गया।। लूका 2:52

- यदि यीशु इस रीति से बढ़ा – हमें कितना और इस रीति से बढ़ना चाहिए
- स्वर्गदूत ने मरियम से कहा, "भयभीत न हो, क्योंकि परमेश्वर का अनुग्रह तुझ पर हुआ है।" (लूका 1:30)

  >मरियम की पवित्रता और धर्मी जीवन के कारण <

- 1 पतरस 2:19–20 क्योंकि यदि कोई परमेश्वर का विचार करके अन्याय से दुख उठाता हुआ क्लेश सहता है (जैसा यीशु ने किया), तो यह सुहावना (χαρις / खारिस) है।(20) क्योंकि यदि तुम ने अपराध करके घूसे खाए और धीरज धरा, तो उस में क्या बड़ाई की बात है? पर यदि भला काम करके दुख उठाते हो और धीरज धरते हो (जैसा यीशु ने किया), तो यह परमेश्वर को भाता (कृपा दृष्टि) है।
    - हमें परमेश्वर से अनुग्रह या कृपा तब प्राप्त होती है जब हम अपना जीवन ऐसे जीते हैं जैसे यीशु जीए – "घूसे खाए और धीरज धरा"।
    - अय्यूब इसका अच्छा उदाहरण है (अय्यूब 1:1–22)

      अय्यूब 13:15 "चाहे वह मुझे घात करे, फिर भी मैं उसमें आशा रखूंगा।"
    - इब्रानियों 11 के सभी विश्वास के वीर इसके उदाहरण हैं: पद 39 "विश्वास ही के द्वारा इन सब के विषय में अच्छी गवाही दी गई "। हालांकि उनका तिरस्कार हुआ और उन्होंने बड़ा क्लेश सहा।
    - विश्वास ही से हनोक उठा लिया गया, कि मृत्यु को न देखे, और उसका पता नहीं मिला; क्योंकि परमेश्वर ने उसे उठा लिया था, और उसके उठाए जाने से पहिले उस की यह गवाही दी गई थी, कि उस ने परमेश्वर को प्रसन्न किया है। इब्रानियों 11:5

- 1 पतरस 2:21–25 और तुम इसी के लिये बुलाए भी गए हो क्योंकि मसीह भी तुम्हारे लिये दुख उठाकर, तुम्हें एक आदर्श दे गया है, कि तुम भी उसके चिन्ह पर चलो।(22) न तो उस ने पाप किया, और न उसके मुंह से छल की कोई बात निकली।(23) वह गाली सुनकर गाली नहीं देता था, और दुख उठाकर किसी को भी धमकी नहीं देता था, पर अपने आप को सच्चे न्यायी के हाथ में सौंपता था।(24) वह आप ही हमारे पापों को अपनी देह पर लिए हुए क्रूस पर चढ़ गया जिस से हम पापों के लिये मर करके धार्मिकता के लिये जीवन बिताएं : उसी के मार खाने से तुम चंगे हुए।(25) क्योंकि तुम पहले भटकी हुई भेड़ों की नाईं थे, पर अब अपने प्राणों के रखवाले और अध्यक्ष के पास फिर आ गए हो।

- पौलुस के कांटे या उसकी पीड़ा के प्रतिउत्तर में प्रभु ने कहा :

मेरा अनुग्रह ($\chi\alpha\rho\iota\varsigma$ / खारिस ; या कृपा) तेरे लिये बहुत (काफी) है; क्योंकि मेरी सामर्थ निर्बलता में सिद्ध होती है; इसलिये मैं बड़े आनन्द से अपनी निर्बलताओं पर घमण्ड करूंगा, कि मसीह की सामर्थ मुझ पर छाया करती रहे। 2 कुरिन्थियों 12:9

  - प्रभु के अनुग्रह या कृपा के साथ उसकी सामर्थ आती है या वह उसे देता है – ताकि मसीह का अलौकिक जीवन जी सकें।

- देने का जीवन जीने के प्रतिउत्तर में प्रभु का कहना है :

  क्योंकि परमेश्वर हर्ष से देनेवाले से प्रेम रखता है। और परमेश्वर सब प्रकार का अनुग्रह तुम्हें बहुतायत से दे सकता है जिस से हर बात में और हर समय, सब कुछ, जो तुम्हें आवश्यक हो, तुम्हारे पास रहे, और हर एक भले काम के लिये तुम्हारे पास बहुत कुछ हो। 2 कुरिन्थियों 9:7–8

  - परमेश्वर हर्ष से देने वाले से इतना प्रेम करता है कि वह आपको अनुग्रह की कृपा देगा ताकि आपके पास हर भले काम के लिए सब कुछ हो। उसका कार्य करने की शक्ति।

* अतः हम देखते हैं कि हम भी "प्रभु के मार्ग जानने" और उस पर चलने (आज्ञा मानने) के द्वारा प्रभु की कृपा–दृष्टि में बढ़ सकते हैं।

- उत्पत्ति 6:8 परन्तु यहोवा के अनुग्रह की दृष्टि (कृपा–दृष्टि) नूह पर बनी रही।।

- प्रेरितों के काम 7:46 दाऊद पर परमेश्वर ने अनुग्रह किया
  - भजन संहिता 27:11 हे यहोवा, अपने मार्ग में मेरी अगुवाई कर।
  - दाऊद प्रार्थना के द्वारा उसके वचनों से उसके मार्ग जानता था।

यह प्रशन है :

- गलातियों 1:10 "क्या अब मैं मनुष्यों की कृपा प्राप्त करना चाहता हूं या परमेश्वर की? या मैं मनुष्यों को प्रसन्न करने का प्रयास कर रहा हूं? यदि मैं अब तक मनुष्यों को प्रसन्न करने का प्रयास करता रहता तो मैं मसीह का दास न होता।
  - यह बहुत गंभीर प्रशन है जिसका उत्तर हमें इमानदारी से देने की ज़रुरत है। हम किसे प्रसन्न करने का प्रयत्न कर रहे हैं?

- 1 थिस्सलुनीकियों 4:1 निदान, हे भाइयों, हम तुम से विनती करते हैं, और तुम्हें प्रभु यीशु में समझाते हैं, कि जैसे तुम ने हम से योग्य चाल चलना, और परमेश्वर को प्रसन्न करना सीखा है, और जैसा तुम चलते भी हो, वैसे ही और भी बढ़ते जाओ।

▪ जैसे-जैसे आप प्रार्थना और वचनों में प्रभु के साथ समय व्यतीत करेंगे आप उसके मार्ग जानेंगे।

▪ जितना अधिक आप उसके मार्ग में चलेंगे, जितना अधिक आप उसको प्रसन्न करेंगे, उतना अधिक वह तुम्हें अपना अनुग्रह और कृपा-दृष्टि देगा।

मूसा की विनती "मुझे अपने मार्ग समझा दे, कि मैं तुझे जान सकूं" के प्रतिउत्तर में प्रभु का जवाब था:

I. मैं तेरे साथ-साथ चलूंगा, और मैं तुझे विश्राम दूंगा। निर्गमन 33:14

- मूसा के पास "परमेश्वर का वचन" था, और वह प्रार्थना का जन था।
- और अब मूसा के साथ चलने के लिए, उससे बात करने के लिए और उसे यह दिखाने के लिए कि परमेश्वर के वचन को प्रत्येक परिस्थितियों में कैसे जीएं, परमेश्वर स्वयं उसके साथ था। यह "उसके मार्ग समझना" है।

और परमेश्वर की प्रतिज्ञा आपके लिए भी है:

"मैं तेरे साथ-साथ चलूंगा, और मैं तुझे विश्राम दूंगा।"

ताकि आपको यह दिखाए कि परमेश्वर के वचन को हर एक परिस्थिति में कैसे जीएं जिससे "उसके मार्ग समझ" सकें।

- मत्ती 28:20 "मैं जगत के अन्त तक सदैव तुम्हारे संग हूं।।"
- यूहन्ना 14:16 "मैं पिता से विनती करूंगा, और वह तुम्हें एक और सहायक देगा, कि वह सर्वदा तुम्हारे साथ रहे।"
- इब्रानियों 13:5 परमेश्वर ने कहा है, कि मैं तुझे कभी न छोडूंगा, और न कभी तुझे त्यागूंगा।

निर्गमन 33:15

I. तब मूसा ने कहा, "यदि तू हमारे साथ न आए, तो हमें यहां से आगे न ले जा। निर्गमन 33:15

* हमारा भी यही दृष्टिकोण होना चाहिए! अपने साथ उसकी उपस्थिति को जानते हुए, और उसकी उपस्थिति पर निर्भर।

▪ नीतिवचन 3:5-6 तू अपनी समझ का सहारा न लेना, वरन सम्पूर्ण मन से यहोवा पर भरोसा रखना। उसी को स्मरण करके (उसकी उपस्थिति को) सब काम करना, तब वे तेरे लिये सीधा मार्ग निकालेगा।

निर्गमन 33:16 यह कैसे जाना जाए कि तेरे अनुग्रह की दृष्टि मुझ पर और अपनी प्रजा पर है? क्या इस से नहीं कि तू हमारे संग संग चले, जिस से मैं और तेरी प्रजा के लोग पृथ्वी भर के सब लोगों से अलग ठहरें?

उसकी उपस्थिति हमें अन्य लोगों से अलग ठहराती है।

हमें अपने आप से पूछना चाहिए:

- क्या मैं दूसरे लोगों से भिन्न हूं?
- क्या दूसरे लोग यह देखते और जानते हैं कि उसकी उपस्थिति मुझे भिन्न बनाती है?
- यीशु के समान हम भी यह कहने के योग्य होने चाहिए:

  मैं ने तेरा नाम उन मनुष्यों पर प्रगट किया है ... यूहन्ना 17:6

> यदि मूसा के समान आपके हृदय की भी यही इच्छा है, तो प्रभु का यह कहना है:

निर्गमन 33:17 मैं यह काम भी जिसकी चर्चा तू ने की है, करूंगा; क्योंकि मेरे अनुग्रह की दृष्टि तुझ पर है, और तेरा नाम मेरे चित्त में बसा है।

> मूसा ने यह महसूस करना आरम्भ कर दिया कि उसे परमेश्वर का अनुग्रह प्राप्त है ... वह हियाव बांधकर पूछता है:

निर्गमन 33:18 तब मूसा ने कहा, मैं तुझ से विनती करता हूं, मुझे अपना तेज दिखा दे।

* परमेश्वर को जानने की उसकी इच्छा का साहस और भूख देख कर, परमेश्वर को प्रसन्नता हुई, और परमेश्वर ने उत्तर दिया:

निर्गमन 33:19–20 उस ने कहा, मैं तेरे सम्मुख होकर चलते हुए तुझे अपनी सारी भलाई दिखाऊंगा, और तेरे सम्मुख यहोवा नाम का प्रचार करूंगा, और जिस पर मैं अनुग्रह करना चाहूं उसी पर अनुग्रह करूंगा, और जिस पर दया करना चाहूं उसी पर दया करूंगा। फिर उस ने कहा, तू मेरे मुख का दर्शन नहीं कर सकता; क्योंकि मनुष्य मेरे मुख का दर्शन करके जीवित नहीं रह सकता।

निर्गमन 33:21–23 फिर यहोवा ने कहा, सुन, मेरे पास एक स्थान है, तू उस चट्टान पर खड़ा हो; (22) और जब तक मेरा तेज तेरे सामने होके चलता रहे तब तक मै तुझे चट्टान के दरार में रखूंगा, और जब तक मैं तेरे सामने होकर न निकल जाऊं तब तक अपने हाथ से तुझे ढांपे रहूंगा। (23) फिर मैं अपना हाथ उठा लूंगा, तब तू मेरी पीठ का तो दर्शन पाएगा, परन्तु मेरे मुख का दर्शन नहीं मिलेगा।।

- मेरे पास एक स्थान है – एक विशेष स्थान
- "चट्टान पर"– "उद्धार की चट्टान" 2 शमूएल 22:47; भजन संहिता 89:26

- "परमेश्वर के मन के अनुसार" पुरुष दाऊद ने भी "गुप्त स्थान" का ज़िक्र किया है।

भजन संहिता 27:5 क्योंकि वह तो मुझे विपत्ति के दिन में अपने मण्डप में छिपा रखेगा; अपने तम्बू के गुप्तस्थान में वह मुझे छिपा लेगा, और चट्टान पर चढ़ाएगा।

भजन संहिता 27:4 एक वर मैं ने यहोवा से मांगा है, उसी के यत्न में लगा रहूंगा; कि मैं जीवन भर यहोवा के भवन में रहने पाऊं, जिस से यहोवा की मनोहरता पर दृष्टि लगाए रहूं, और उसके मन्दिर में ध्यान किया करूं।।

भजन संहिता 27:7-9 हे यहोवा, मेरा शब्द सुन, मैं पुकारता हूं, तू मुझ पर अनुग्रह कर और मुझे उत्तर दे। तू ने कहा है, कि मेरे दर्शन के खोजी हो। इसलिये मेरा मन तुझ से कहता है, कि हे यहोवा, तेरे दर्शन का मैं खोजी रहूंगा। अपना मुख मुझ से न छिपा।।

भजन संहिता 31:20 तू उन्हें दर्शन देने के गुप्तस्थान में मनुष्यों की बुरी गोष्ठी से गुप्त रखेगा; तू उनको अपने मण्डप में झगड़े-रगड़े से छिपा रखेगा।।

श्रेष्ठगीत 2:14 ओ मेरी कबूतरी! चट्टानों की दरारों में, सीधी ऊंची चढ़ाइयों के गुप्त स्थान में, मैं तेरा रुप देख पाऊं, मैं तेरी वाणी सुन पाऊं, क्योंकि तेरी वाणी मधुर है और तेरा रुप मनोहर है।

* गुप्त स्थान परमेश्वर के साथ घनिष्ठता और सहभागिता का विशेष स्थान है। यह उन लोगों का स्थान है जो परमेश्वर की महिमा के लिए उत्साही हैं।

* मूसा के हृदय की ज्वलित इच्छा कि वह परमेश्वर की महिमा देखे, वही इच्छा है जो यीशु की हमारे लिए है कि हम उसकी महिमा देखें।

  यूहन्ना 17:24 हे पिता, मैं चाहता हूं कि जिन्हें तू ने मुझे दिया है, जहां मैं हूं, वहां वे भी मेरे साथ हों कि वे मेरी उस महिमा को देखें जो तू ने मुझे दी है, क्योंकि तू ने जगत की उत्पत्ति से पहले मुझ से प्रेम रखा।

* उस स्थिति तक जहां यह इच्छा पूर्ण हो जाती है > हमने उसकी महिमा देखी:

  2 कुरिन्थियों 3:18 परन्तु जब हम सब के उघाड़े चेहरे से प्रभु का प्रताप इस प्रकार प्रगट होता है, जिस प्रकार दर्पण में, तो प्रभु के द्वारा जो आत्मा है, हम उसी तेजस्वी रूप में अंश अंश कर के बदलते जाते हैं।।

  - दर्पण – सृष्टि उसे प्रतिबिम्बित करती है जिस प्रकार उसके लोग और उसका वचन।

* जब हम परमेश्वर का अनुसरण ऐसे उत्साह के साथ करते हैं – यह हमें उसके स्वरुप में बदल देता है ... तेजस्वी रुप में।

- क्योंकि यही उद्देश्य उसके पुत्र का भी था :

  अपने पुत्र की महिमा कर, कि पुत्र भी तेरी महिमा करे। यूहन्ना 17:1

  - इस पृथ्वी पर हमारा भी यही उद्देश्य है। जैसे तू ने जगत में मुझे भेजा, वैसे ही मैं ने भी उन्हें जगत में भेजा। यूहन्ना 17:18
  - हमारा वही मिशन है जो यीशु का थाः कि पुत्र भी तेरी महिमा करे।

- तब हम यीशु के साथ यह कह सकते हैं:

  जो काम तू ने मुझे करने को दिया था, उसे पूरा करके मैं ने पृथ्वी पर तेरी महिमा की है। यूहन्ना 17:4

  और

  मैं ने तेरा नाम उन मनुष्यों पर प्रगट किया ... यूहन्ना 17:6

यीशु ने अपने पिता का नाम बताया है :

यूहन्ना 17:6 मैं ने तेरा नाम उन मनुष्यों पर प्रगट किया जिन्हें तू ने जगत में से मुझे दियाः वे तेरे थे और तू ने उन्हें मुझे दिया और उन्हों ने तेरे वचन को मान लिया है।

यूहन्ना 17:26 और मैं ने तेरा नाम उन को बताया और बताता रहूंगा कि जो प्रेम तुझ को मुझ से था, वह उन में रहे और मैं उन में रहूं।।

सवाल यह है : क्या हम परमेश्वर की महिमा देखने और उसका प्रचार करने के लिए इस प्रकार का उत्साह और उमंग रखते हैं?

इसके लिए आवश्यक है :

भजन संहिता 63:1 "हे परमेश्वर, तू मेरा परमेश्वर है; मैं तुझे यत्न से (शाब्दिक : अति भोर को) ढूंढूंगा; सूखी और प्यासी, हां निर्जल भूमि पर मेरा प्राण तेरा प्यासा है, मेरा शरीर तेरा अति अभिलाषी है।"

श्रेष्ठगीत 7:12 हम तड़के उठकर ...